RESEARCH PAPER

RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
e-ISSN: 2455-3085 | Vol.06 | Iss.07 | July 2021 | pp. 140-145
Double-Blind Peer Reviewed/Refereed Journal

दुर्ग – भिलाई नगरों की कार्यशील महिलाओं की मासिक आय स्तर तथा पारिवारिक आय में आर्थिक सहभागिता का स्थानिक एवं कालिक विश्लेषण

शिवेन्द्र बहादुर

शोध छात्र, भूगोल अध्ययनशाला, पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.) 492010

Abstract

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य, छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग – भिलाई नगरों की कार्यशील महिलाओं की मासिक आय स्तर तथा पारिवारिक आय में आर्थिक सहभागिता का स्थानिक एवं कालिक विश्लेषण करना है। इन नगरों की कार्यशील महिलाओं के विस्तृत अध्ययन हेतु उद्देश्य पूर्ण दैव निदर्शन विधि के आधार पर विभिन्न कार्यों में संलग्न कार्यशील महिलाओं से संबंधित जानकारियाँ साक्षात्कार एवं अनुसूची के माध्यम से प्राप्त की गई। इस प्रकार दोनों नगरों से कुल 1202 कार्यशील महिलाओं से जानकारी प्राप्त की गई। प्रस्तुत शोध पत्र में तथ्यों एवं आँकड़ों को सरलता से समझने योग्य एवं बोधगम्य बनाने हेतु आवश्यकतानुसार उपयुक्त आरेखीकरण विधि का प्रयोग किया गया है।

Keywords: *मासिक आय स्तर, पारिवारिक आय, आर्थिक सहभागिता।*

Article Publication

Published Online: 15-Jul-2021

***Author's Correspondence**

शिवेन्द्र बहादुर

शोध छात्र, भूगोल अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ. ग.) 492010

shivendrakorar@gmail.com

10.31305/rrijm.2021.v06.i07.023

© 2021The Authors. Published by RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

प्रस्तावना –

आधुनिक समाजों में सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को आय के पैमाने के द्वारा मापा जाता है। व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कार्य करता है, तथा उस कार्य के बदले वह कुछ प्रतिफल चाहता है, जिसे आय कहा जाता है (कपाड़िया,1966)। किसी प्रदेश की जनसंख्या का आर्थिक स्तर उस प्रदेश में निवास करने वाले लोगों की आय के स्तर द्वारा निर्धारित होता है। प्रायः समाज में आय का असमान वितरण दिखाई देता है। इस आधार पर जनसंख्या के आय स्तर को ध्यान में रखकर नियोजन कार्य किया जाता है। नगरीय क्षेत्रों में भी कार्यशील महिलाओं के मासिक आय स्तर के आधार पर उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। जनसंख्या का आय एवं जीवन स्तर से सीधा संबंध होता है। यदि आय अधिक होती है तो जीवन स्तर उच्च होता है और यदि आय स्तर निम्न होती है तो जीवन स्तर निम्न होता है। इस प्रकार व्यक्ति का जीवन स्तर आय स्तर द्वारा निर्धारित होता है। इस प्रकार कार्यशील महिलाओं का आय स्तर उनके परिवार के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं कार्यिक प्रतिरूप द्वारा निर्धारित होता है।

अध्ययन का उद्देश्य –

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य, छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग – भिलाई नगरों की कार्यशील महिलाओं की मासिक आय स्तर तथा पारिवारिक आय में आर्थिक सहभागिता का स्थानिक एवं कालिक विश्लेषण करना है।

अध्ययन क्षेत्र –

दुर्ग नगर छत्तीसगढ़ का प्रमुख व्यापारिक एवं वाणिज्यिक नगर तथा भिलाई नगर एक औद्योगिक नगर है। दुर्ग नगर के विकास में भिलाई औद्योगिक नगर की निकटता का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसीलिए इन्हें छत्तीसगढ़ का

एक मात्र जुड़वा नगर कहा जाता है। दुर्ग नगर जिले का प्रशासनिक केन्द्र एवं जिला मुख्यालय है। भिलाई नगर का विकास भिलाई ग्राम से हुआ जो नगर के उत्तरी भाग में स्थित है। वर्ष 1956 में लौह इस्पात संयंत्र की स्थापना के पूर्व तक भिलाई एक छोटा ग्राम था परन्तु लौह इस्पात संयंत्र की स्थापना के बाद भिलाई नगर का विकास औद्योगिक नगर के रूप में हुआ। दोनों नगर से होकर राष्ट्रीय राजमार्ग 58 गुजरता है। दुर्ग नगर, राज्य की राजधानी रायपुर से 45 किलोमीटर तथा भिलाई नगर 30 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। दुर्ग एवं भिलाई नगर के मध्य की दूरी 12 कि.मी. है। वर्तमान में दुर्ग नगर 58 वार्डो में जबकि भिलाई नगर 70 वार्डो में विभक्त है। दुर्ग नगर का कुल क्षेत्रफल 54.11 वर्ग कि. मी. है, वहीं भिलाई नगर का कुल क्षेत्रफल 142.32 वर्ग कि.मी. है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार दुर्ग नगर की कुल जनसंख्या 2,68,806 व्यक्ति है, वहीं भिलाई नगर की कुल जनसंख्या 6,27,734 व्यक्ति है। दुर्ग नगर का जनसंख्या घनत्व (4968 व्यक्ति प्रतिवर्ग कि.मी.) भिलाई नगर की तुलना में (4411 व्यक्ति प्रतिवर्ग कि.मी) अधिक है। दुर्ग नगर की कुल महिला जनसंख्या मे 72.62 प्रतिशत महिलाएँ साक्षर हैं, जबकि भिलाई नगर की कुल महिला जनसंख्या में 71.85 प्रतिशत महिलाएँ साक्षर हैं। दुर्ग नगर की तुलना में (17.76 प्रतिशत) भिलाई नगर में कुल महिला जनसंख्या में कार्यशील महिलाओं का प्रतिशत (12.07 प्रतिशत) कम है।

आँकड़ों के स्रोत एवं विधितंत्र –

प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित है। इनमें नगरीय कार्यशील महिलाओं की मासिक आय एवं पारिवारिक आय में आर्थिक सहभागिता संबंधी आँकड़ें प्रमुख हैं, तथापि नगर से संबधित भौगोलिक एवं सास्कृतिक जानकारी द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है।

प्राथमिक आँकड़ें –

दुर्ग–भिलाई नगरों की कार्यशील महिलाओं की मासिक आय एवं पारिवारिक आय में आर्थिक सहभागिता से संबंधित जानकारी प्राप्त करने के लिए साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण किया गया। इन नगरों में कार्यशील महिलाओं के विस्तृत अध्ययन करने हेतु उद्देश्य पूर्ण दैव निदर्शन विधि के आधार पर विभिन्न कार्यों में संलग्न कार्यशील महिलाओं से संबंधित जानकारियाँ साक्षात्कार एवं अनुसूची के माध्यम से प्राप्त की गई। कार्यशील महिलाओ से संबंधित जानकारी उसके कार्यस्थल यथा– शासकीय एवं अशासकीय कार्यालय, शिक्षण संस्थानों, अस्पताल, दुकानों, निर्माण स्थलों, मलिन बस्तियों में जा कर प्राप्त की गई। इस प्रकार दोनों नगरों की कुल कार्यशील महिलाओं में से 1202 (दुर्ग नगर से 588 एवं भिलाई नगर 614 से कार्यशील) महिलाओं का चयन किया गया।

द्वितीयक आँकड़ें –

दुर्ग – भिलाई नगरों की भौगोलिक एवं सांस्कृतिक तथ्यों के विश्लेषण के लिए द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया। नगरों की जनसंख्या संबंधी आँकड़ें जनगणना पुस्तिका जिला दुर्ग, 2011 एवं नगर के मानचित्र संचालनालय, नगर तथा ग्राम निवेश रायपुर (छ.ग.) से प्राप्त किए गए हैं।

विधितंत्र –

साक्षात्कार अनुसूची से प्राप्त आँकड़ों के प्रक्रियान्वयन के लिए सर्वप्रथम अनुसूची में संपादन तथा संकेतीकरण किया गया तथा प्राप्त सूचनाओं को कम्पयूटर में प्रविष्ट कर वर्गीकरण एवं सारणीयन का कार्य सम्पन्न किया गया। अध्ययन की विषय–वस्तु के आधार पर चयनित कार्यशील महिलाओं की मासिक आय एवं पारिवारिक आय में आर्थिक सहभागिता का स्थानिक एवं कालिक विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में तथ्यों एवं आँकड़ों को सरलता से समझने योग्य एवं बोधगम्य बनाने हेतु आवश्यकतानुसार उपयुक्त मानचित्रीकरण एवं आरेखीकरण विधि का प्रयोग किया गया है।

कार्यशील महिलाओं के मासिक आय स्तर का स्थानिक विश्लेषण

पारिवारिक आय को सुदृढ़ एवं मजबूत करने में महिलाओं ने पुरुषों के साथ आर्थिक क्रियाओं में सम्मिलित होकर महत्वपूर्ण योगदान प्रस्तुत किया है। दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगरों में चयनित कार्यशील महिलाओं के मासिक आय

स्तर को स्थानिक एवं कालिक परिपेक्ष में विश्लेषित किया गया है, क्योकि विभिन्न कालिक वर्षों में महिलाओं की व्यावसायिक संरचना में शैक्षणिक वृद्धि होने से सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं, जिसका उनके मासिक आय स्तर पर स्पष्ट प्रभाव दृष्टव्य हुआ है। इन्हीं तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए दोनों नगरों के कार्यशील महिलाओं के मासिक स्तर को तीन आय स्तरों में यथा– निम्न, मध्यम एवं उच्च में वर्गीकृत कर विश्लेषित किया गया है। निम्न आय स्तर में उन कार्यशील महिलाओं को सम्मिलित किया गया, जिनकी मासिक आय 10000 रू. से कम रही, वहीं मध्यम आय स्तर में 10000 से 20000 रू. के मध्य मासिक आय प्राप्त कार्यशील महिलाओं को सम्मिलित किया गया, जबकि उच्च मासिक आय स्तर में उन कार्यशील महिलाओं को सम्मिलित किया गया, जो 20000 रू. से अधिक मासिक आय प्राप्त करती हैं। इस प्रकार दोनों जुड़वा नगरों में कार्यशील महिलाओं की कार्यिक सहभागिता जहाँ 10000 रू. से कम मासिक आय (51.75%) में प्राप्त हुई, वहीं आय स्तर में वृद्धि के साथ कार्यशील महिलाओं की न्यूनतम सहभागिता (18.46%) 20000 रू. से अधिक मासिक आय स्तर में प्राप्त हुई। इस प्रकार अधिकतम एवं न्यूनतम आय स्तर में आर्थिक विभेद 2.8 गुना प्राप्त हुआ।

सारणी क्र. 1.1
दुर्ग –भिलाई नगर : चयनित कार्यशील महिलाओं के मासिक आय स्तर का स्थानिक विश्लेषण, 2018

क्र.	नगर	कुल कार्यशील महिला	मासिक आय रूपये में					
			10000 से कम		10000–20000		20000 से अधिक	
1.	भिलाई	614	302	49.19	186	30.29	126	20.52
2.	दुर्ग	588	320	54.42	172	29.25	96	16.33
कुल		**1202**	**622**	**51.75**	**358**	**29.78**	**222**	**18.47**

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण, 2018

तुलनात्मक दृष्टि से भिलाई नगर (2 गुना) की तुलना में दुर्ग नगर (3 गुना) में कार्यशील महिलाओं के आय स्तर में आर्थिक विभेद अधिक प्राप्त हुआ, तथापि दोनों नगरों के कार्यशील महिलाओं में 10000 रू. से कम मासिक आय स्तर में कार्यशील महिलाओं की सर्वाधिक सहभागिता (54.42%) जहाँ दुर्ग नगर में प्राप्त हुई, वहीं 10000 रू. से अधिक मासिक आय स्तरों में दुर्ग नगर (45.58%) की तुलना में भिलाई नगर (50.81%) में अपेक्षाकृत अधिक रही, जो कार्यशील महिलाओं के कार्यिक संरचना में कार्यिक विभेद का प्रतिफल है **(सारणी क्र. 1.1 एवं आरेख 1.1)**।

दुर्ग–भिलाई नगर : चयनित कार्यशील महिलाओं के मासिक आय स्तर का स्थानिक विश्लेषण, 2018

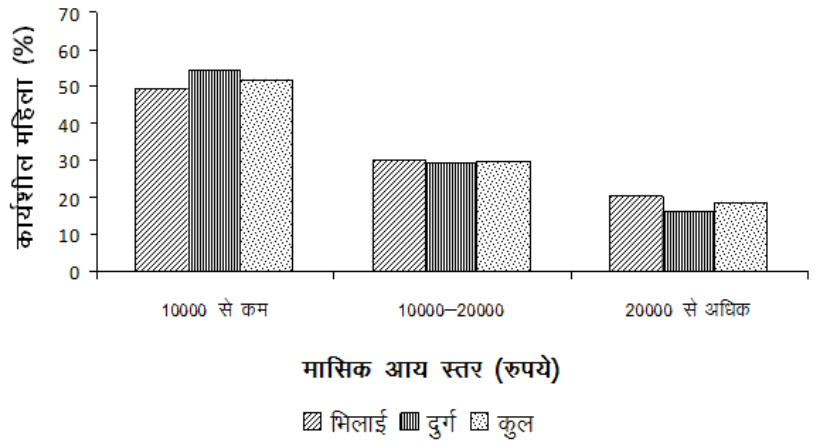

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण, 2018 आरेख 1.1

कार्यशील महिलाओं के मासिक आय स्तर का कालिक विश्लेषण

दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगरों की चयनित कार्यशील महिलाओं के उच्च शैक्षणिक एवं व्यावसायिक शिक्षा में अधिक भागीदारी के कारण उनके कार्यिक संरचना में परिवर्तन हुए। विभिन्न कालिक वर्षों में महिलाओं के शैक्षणिक स्तरों में जहाँ तीव्र वृद्धि हुई, वहीं महिलाओं के कार्यिक संरचना में परिवर्तन होने से मासिक आय स्तर में भी सकारात्मक परिवर्तन सम्भव हुए। वर्ष 1980 से पूर्व कार्यशील महिलाओं के मासिक निम्न (73.85%) एवं उच्च (10.77%) आय स्तर में 6.8 गुना का अन्तर था, जो वर्ष 1981–2000 के कालिक वर्ष में घटकर 5.8 गुना एवं वर्ष 2001 के बाद के कालिक वर्ष में घटकर 1.7 गुना हो गया। तुलनात्मक दृष्टि से वर्ष 1980 के पूर्व निम्न आय स्तर में कार्यशील महिलाओं की अधिक सहभागिता (76.92%) जहाँ दुर्ग नगर में प्रदर्शित हुई, वहीं उच्च आय स्तर में कार्यशील महिलाओं की अधिक सहभागिता भिलाई नगर (11.54%) में प्रदर्शित हुई। इस प्रकार इस कालावधि में कार्यशील महिलाओं के मासिक आय स्तर में अधिक विभेद दुर्ग नगर (10 गुना) में प्राप्त हुआ, जबकि 1981–2000 के कालिक वर्ष में कार्यशील महिलाओं का आर्थिक विभेद घटकर क्रमशः दुर्ग नगर में 8.7 गुना एवं भिलाई नगर में 4 गुना प्राप्त हुआ। इसके विपरीत वर्ष 2001 के बाद महिलाओं के विभिन्न मासिक आय स्तरों की सहभागिता में आर्थिक विभेद दुर्ग नगर (2 गुना) की तुलना में भिलाई नगर (1.4 गुना) में कम प्राप्त हुआ। इस प्रकार वर्तमान में दोनों जुड़वा नगरों के कार्यशील महिलाओं के शैक्षणिक एवं व्यावसायिक स्तर में वृद्धि से उनके कार्यिक संरचना में परिवर्तन हुआ, जिसका प्रभाव उनकी मासिक आय स्तर की सहभागिता में दिखाई दिया।

कार्यशील महिलाओं का पारिवारिक आय में आर्थिक सहभागिता

भारत, पुरुष प्रधान समाज होने के कारण जहाँ पुरुषों की आर्थिक सहभागिता महिलाओं से अधिक होती है, वहीं पारिवारिक आय के निर्धारण में पुरुषों की कार्यिक दक्षता विशेष महत्व रखती है, तथापि स्त्री शिक्षा के बढ़ते प्रभाव के कारण विशेषकर उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाएँ पारिवारिक दायित्वों के निवर्हन के साथ पारिवारिक आय को उन्नत एवं समृद्ध करने के लिए आर्थिक क्रियाओं में संलग्न हुई हैं। यद्यपि निर्धन महिलाएँ प्रतिमाह निम्न आय प्राप्त करती है, किन्तु वे परिवार के आय में महत्वपूर्ण योगदान देती है (रॉय, 1978)। इस प्रकार एक निम्न आय स्तर के परिवारों के लिए महिलाओं का आय उनके पारिवारिक आय का एक महत्वपूर्ण भाग होता है। प्रीति (1991), नारायण (1993), मेर (1988) तथा गुप्ता एवं शर्मा (2004) के अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि कार्यशील महिलाओं के घरेलु कार्य एवं पारिवारिक कार्यों को राष्ट्रीय आय में सम्मिलित नहीं किया जाता है। अस्तु, कार्यशील महिलाओं में मजदूरी एवं घरेलू मजदूरी कार्यों में संलग्न महिला पुरुषों के संग बराबर की सहभागिता रखती है। इसीलिए परिवार की आय में इन महिलाओं की सहभागिता 25–50 प्रतिशत की होती है। इसी प्रकार मध्यम आय स्तर में महिलाओं की कार्यिक संरचना उनके पति के समतुल्य होती है। इसीलिए महिलाओ की सहभागिता पारिवारिक आय स्तर में 25–50 प्रतिशत के मध्य होती है। इसके विपरीत उच्च आय स्तर की महिलाएँ उच्च आर्थिक स्तर के परिवारों से होती हैं, जहाँ आर्थिक सम्पन्नता अपेक्षाकृत अधिक होती है। इसीलिए इन महिलाओं का परिवार की मासिक आय में आर्थिक सहयोग 25 प्रतिशत से कम होता है, वहीं विधवा/परित्यक्ता महिलाएँ अपने परिवार में एक मात्र क्रियाशील होती है। इसीलिए पारिवारिक आय में इनकी सहभागिता 75 प्रतिशत से अधिक होती है।

कार्यशील महिलाओं का पारिवारिक आय में आर्थिक सहभागिता का स्थानिक विश्लेषण

महिलाओं के पारिवारिक आय में आर्थिक सहभागिता पर महिलाओं की कार्यिक संरचना के साथ उनकी परिवार की आर्थिक स्थिति विशेष महत्व रखती है। अस्तु, दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगरों में कार्यशील महिलाओं के पारिवारिक आय में आर्थिक सहभागिता को उपरोक्त तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए चार वर्गों– 25 प्रतिशत से कम, 25 से 50 प्रतिशत, 50 से 75 प्रतिशत एवं 75 प्रतिशत से अधिक आर्थिक सहभागिता वाली महिलाओं में वर्गीकृत कर विश्लेषित किया गया है। दोनों जुड़वा नगरों की कुल चयनित कार्यशील महिलाओं की पारिवारिक आय में सबसे अधिक सहभागिता 25–50 प्रतिशत सहभागिता में (44.51%) में प्राप्त हुई एवं सबसे कम पारिवारिक आय में सहभागिता 75 प्रतिशत से अधिक (15. 14%) में प्रदर्शित हुई। तुलनात्मक दृष्टि से भिलाई नगर की कार्यशील महिलाओं का पारिवारिक आय में आर्थिक

सहभागिता का प्रतिशत जहाँ 25 प्रतिशत से कम (26.22%) में प्राप्त हुआ, वहीं दुर्ग नगर में कार्यशील महिलाओं का 25 प्रतिशत से अधिक (77.89%) सहभागिता में प्राप्त हुआ **(सारणी क्र. 1.2 एवं आरेख 1.2)**।

सारणी क्र. 1.2

दुर्ग –भिलाई नगर : चयनित कार्यशील महिलाओं की पारिवारिक आय में आर्थिक सहभागिता, 2018

क्र.	नगर	कुल कार्यशील महिला	पारिवारिक आय में आर्थिक सहभागिता प्रतिशत							
			25 प्रतिशत से कम		25–50 प्रतिशत		50–75 प्रतिशत		75 प्रतिशत से अधिक	
			कुल	%	कुल	%	कुल	%	कुल	%
1.	भिलाई	614	161	26.22	271	44.14	93	15.15	89	14.50
2.	दुर्ग	588	130	22.11	264	44.90	101	17.18	93	15.81
	कुल	**1202**	**291**	**24.21**	**535**	**44.51**	**194**	**16.14**	**182**	**15.14**

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण, 2018

दुर्ग–भिलाई नगर : चयनित कार्यशील महिलाओं की पारिवारिक आय में आर्थिक सहभागिता का विश्लेषण, 2018

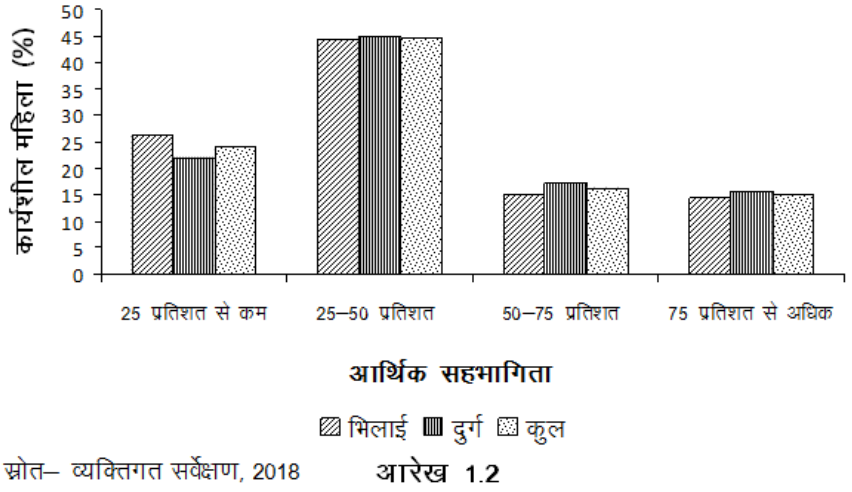

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण, 2018 **आरेख 1.2**

कार्यशील महिलाओं का पारिवारिक आय में आर्थिक सहभागिता का कालिक विश्लेषण

दुर्ग–भिलाई नगरों की चयनित कार्यशील महिलाओं की पारिवारिक आय में उनके आर्थिक सहभागिता में विभिन्न कालिक वर्षों में पर्याप्त अन्तर दृष्टव्य हुआ। विभिन्न कालिक वर्षों में कार्यशील महिलाओं के पारिवारिक आय में 25 प्रतिशत से कम की सहभागिता वाली कार्यशील महिलाओं का प्रतिशत जहाँ कम रहा, वहीं 25–50 प्रतिशत में कार्यशील महिलाओं की पारिवारिक आय में सहभागिता में निरन्तर वृद्धि दृष्टव्य हुई। इसके विपरीत 50 प्रतिशत से अधिक पारिवारिक आय में सहभागी कार्यशील महिलाओं के प्रतिशत में निरन्तर कमी हुई। वर्ष 1980 के पूर्व पारिवारिक आय में 25 प्रतिशत से कम आर्थिक सहभागिता वाली कार्यशील महिलाओं का प्रतिशत (29.23%) अपेक्षाकृत अधिक रहा, वहीं 75–100 प्रतिशत पारिवारिक आय में सहभागी कार्यशील महिलाओं का प्रतिशत न्यूनतम (18.46%) रहा। तुलनात्मक दृष्टि से 25 प्रतिशत से कम पारिवारिक आय में सहभागी कार्यशील महिलाएँ (30.77%) एवं 50–75 प्रतिशत पारिवारिक आय में सहभागी कार्यशील महिलाएँ (30.77%) जहाँ दुर्ग नगर में दृष्टव्य हुई, वहीं भिलाई नगर में 25 से 50 प्रतिशत (30.77%) एवं 75 से 100 प्रतिशत (19.23%) पारिवारिक आय में सहभागी महिलाओं का प्रतिशत अधिक रहा।

इसके विपरीत वर्ष 1981–2000 के कालिक वर्ष में कार्यशील महिलाओ की पारिवारिक आय में सबसे अधिक सहभागिता 25–50 प्रतिशत (30.56%) में प्राप्त हुई, जबकि न्यूनतम सहभागिता 25 प्रतिशत से कम पारिवारिक आय की

सहभागिता में (22.92%) में प्राप्त हुई। तुलनात्मक दृष्टि से 50 प्रतिशत से कम सहभागिता (55.19%) एवं 75 प्रतिशत से अधिक सहभागिता (20.75%) जहाँ भिलाई नगर की कार्यशील महिलाओं में प्राप्त हुई, वहीं 50 से 75 प्रतिशत की पारिवारिक आय में सहभागिता (30.91%) दुर्ग नगर की कार्यशील महिलाओं में प्राप्त हुई। इसके विपरीत वर्ष 2001 के बाद के कालिक वर्ष में दोनों जुड़वा नगरों की कार्यशील महिलाओं के पारिवारिक आय में सर्वाधिक सहभागिता 25 से 50 प्रतिशत (54.47%) में प्राप्त हुई, जबकि कार्यशील महिलाओं की पारिवारिक आय में न्यूनतम सहभागिता (8.51%) 50 से 75 प्रतिशत में प्राप्त हुई।

निष्कर्ष–

स्थानिक दृष्टि से दोनों जुड़वा नगरों में कार्यशील महिलाओं की कार्यिक सहभागिता 10000 रू. से कम मासिक आय स्तर (51.75%) में सर्वाधिक प्राप्त हुई। कार्यशील महिलाओं की 10000 रू. से कम मासिक आय स्तर में सर्वाधिक सहभागिता जहाँ दुर्ग नगर में प्राप्त हुई, वहीं 10000 रू. से अधिक मासिक आय स्तर में दुर्ग नगर की तुलना में भिलाई नगर में कार्यशील महिलाओं का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक रहा। दुर्ग–भिलाई जुड़वा नगरों में पिछले 4 दशकों के कालिक वर्षों में महिलाओं के मासिक आय स्तरों में आर्थिक विभेद में जहाँ कमी हुई, वहीं निम्न आय स्तर में कमी एवं मध्यम उच्च आय स्तर में कार्यशील महिलाओं की सहभागिता में वृद्धि की प्रवृत्ति दृष्टव्य हुई, जो दोनों नगरों की कार्यशील महिलाओं के उच्च शैक्षणिक स्तर एवं कार्यिक संरचना में परिवर्तन का प्रतिफल है।

उल्लेखनीय है कि दुर्ग नगर की कार्यशील महिलाओं की क्रियाशीलता मजदूरी एवं अस्पताल में जहाँ अधिक है, वहीं भिलाई नगर की कार्यशील महिलाओं की कार्यिक संरचना दुकान/व्यापार, बैंक अशासकीय एवं शासकीय सेवा तथा शैक्षणिक संस्थान में अधिक है, जिसके कारण महिलाओं की पारिवारिक आय में आर्थिक सहभागिता में विभेद दृष्टव्य हुआ। वर्ष 2001 के बाद के कालिक वर्ष में दोनों जुड़वा नगरों की कार्यशील महिलाओं की पारिवारिक आय की आर्थिक सहभागिता में 6 गुना का अन्तर दृष्टव्य हुआ, जो कार्यशील महिलाओं के कार्यिक संरचना में परिवर्तन का प्रतिफल है। इस कालिक वर्ष में कार्यशील महिलाओं के पारिवारिक आय में आर्थिक सहभागिता 25–50 प्रतिशत में जहाँ वृद्धि हुई, वहीं अन्य सहभागी प्रतिशतों में कमी दृष्टव्य हुई, जो महिला एवं पुरूषों के समतुल्य कार्यिक संरचना का प्रतिफल है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

Gupta, M.P. and S. Sharma (2004) : "Occupational Pattem of In-Migrants Women in Raipur City, India", *The Deccan Geoprapher*, Vol. 42. No. 1 pp. 13-27.

Kapadia, K.M. (1966) : *Marriage and Family in India*, Oxford University Press.

Mair, G.R. (1988) : "Women Workers, the Lingermg Paradoxes", *Social Welfare*, Vol. 35, No 2, pp. 4-9.

Narain, S.T. (1993) : "Education of the Girl Child", *Yojana*, Vol. 37, No. 10, p. 69.

Preety (1991) : *Economic Contribution of Women in Rural Household*, Unpublished M.Sc. Thesis, HAU, Hisar.

Roy, P. (1978) : "Quantitative Mapping of Working Population", *Demography*, Academic Press, New York, p. 105.